अध्याय 6

जलप्रलय: विनाश और संरक्षण

उत्पत्ति 4 में कैन और लेमेक और उनकी संतानों की वंशावली पाई जाती है और अध्याय 5 में शेत की संतान से नूह और उसके पुत्रों तक के वंशजों के नाम पाए जाते हैं। अध्याय 6 में अगली पीढ़ी तक जारी नैतिक पतन का विश्लेषण पाया जाता है।

परमेश्वर के पुत्र और मनुष्यों की पुत्रियां (6:1-4)

[1]फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियां उत्पन्न हुई, [2]तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं; सो उन्होंने जिस जिसको चाहा उनसे ब्याह कर लिया। [3]और यहोवा ने कहा, "मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है: उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।" [4]उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे; और इसके पश्चात जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए वे शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीन काल से प्रचलित है।

आयतें 1, 2. यह अध्याय इस संबंध को जोड़ते हुए प्रारंभ होता है कि **जब मनुष्य भूमि के ऊपर बढ़ने लगे** तो **उनकी बेटियां उत्पन्न हुई।** जब ये लड़कियाँ जवान हुई **तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं।** परिणामस्वरूप, **उन्होंने जिस जिस को चाहा उन से ब्याह कर लिया।**

लेखक यहाँ किनको "परमेश्वर के पुत्र" के रूप में संबोधित कर रहा है? कम से कम इस अनुच्छेद के तीन अनुवादों का समर्थन पाया जाता है। सबसे पहले यह स्वर्गीय दूतों के बारे में है (देखें अय्यूब 1:6; 2:1)। यह द्वितीय सदी ईसा पूर्व के अप्रमाणिक (अपोक्रिफल) कार्य, 1 एनोक, के यहूदी लेखक की मान्यता थी।[1] ऐसा माना जाता है कि ये स्वर्गीय प्राणी मानव रूप में धरती पर आए और उन्होंने "मनुष्य के पुत्रियों" के साथ सहवास किया जिसके परिणामस्वरूप असाधारण दानव (नेफिलिम) पैदा हुए। आज तक इस विषय पर सामान्य विचारधारा बनी हुई है।[2]

मत्ती 22:30 में लिखे यीशु के वचन के अनुसार ऐसे वक्तव्यों का इनकार किया जाना चाहिए। उसने कहा कि पुनरुत्थान के बाद मनुष्य, स्वर्गदूत (स्वर्गीय

प्राणी) के समान होंगे, "जो न तो ब्याह करेंगे और न ही ब्याह में दिए जाएंगे।" मनुष्य (स्वर्गदूत नहीं[3]) "जल प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते पीते थे, और उन में ब्याह शादी होती थी" (मत्ती 24:38)। लूका के वृतांत के अनुसार यीशु ने कहा कि मृतकों में से जी उठे लोग "फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे" (लूका 20:35, 36)। चूंकि स्वर्गदूत मरणहार नहीं है और "परमेश्वर के पुत्र" जिन्होंने "मनुष्यों के पुत्रियों" से ब्याह किया, अपनी संतानों समेत जलप्रलय में नाश हो गए अतः ये "पुत्र" स्वर्गदूत नहीं हो सकते।

जलप्रलय, मनुष्य के पाप के कारण परमेश्वर द्वारा धरती पर भेजा गया न्याय था। यह स्वर्गदूतों का पाप नहीं है बल्कि उन "बलशाली योद्धा" की "दुष्टता" है जिनको 6:4, 5 में "शूरवीर" करके संबोधित किया गया है। जलप्रलय के रूप में परमेश्वर का क्रोध स्वर्गदूत या अर्ध स्वर्गदूत बच्चों के लिए नहीं था। उसने तो यह ठान लिया था कि वह मनुष्यों को धरती से मिटा डालेगा (6:7) क्योंकि वे दोषी ठहराए गए थे। उत्पत्ति का पाठ और यीशु की शिक्षा स्वर्गीय प्राणी और मनुष्यों के मध्य वैवाहिक संबंध को नकारती है और यह कि उनके सहवास से पैदा हुए बच्चों के कारण धरती पर बाढ़ आया।

"परमेश्वर के पुत्र" का दूसरा विश्लेषण यह है कि वे "बलशाली" पुरुष, संभवतः "शासक"[4] थे, जिन्होंने देखा कि "मनुष्य के पुत्रियाँ सुंदर है" और जिनको उन्होंने चुना वे उनको रानीवास में ले गए। रब्बियों ने इस विचार को पहले विचार से अधिक सही समझा है। यह विचार कि ईश्वरीय प्राणी धरती पर आकर मानव स्त्री से संभोग करें, प्राचीन रब्बियों के लिए अन्यजातीय विचारधारा था और उनको यह स्वीकार्य नहीं था।

प्राचीन संसार में, शासक या सर्वोच्च न्यायाधीश को "ईश्वर" की उपमा दी गई है (भजन 82)। वे सामर्थशाली होते थे और उनके दरबार में उनके राज्य की जनता न्याय के लिए गुहार लगाते थे। वे "परमप्रधान के पुत्र" करके संबोधित किए जाते थे (भजन 82:6),[5] परंतु वे निश्चित रूप से ईश्वर या ईश्वरीय प्राणी नहीं थे।[6] उत्पत्ति के मूल पाठ में ऐसा कोई संकेत नहीं है जो "परमेश्वर के पुत्र" को शासक (ईश्वर या स्वर्गदूत)के रूप में बताए जिन्होंने "मनुष्यों के पुत्रियों" को ब्याह के लिए विवश किया हो या फिर उनके रानीवास का भाग बनें। भजन 82 को उत्पत्ति 6:2 के प्रलयपूर्व संदर्भ में पढ़ना कुछ ज्यादा ही रचनात्मक विश्लेषण है।

"परमेश्वर के पुत्रों" के बारे में तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण एवं संभावित विश्लेषण या व्याख्या यह है कि वे शेत के वंश के थे जो अध्याय 5 की वंशावली में शामिल किए गए हैं। ये लोग संभवतः धर्मी एवं परमेश्वर का भय मानने वाले थे क्योंकि ये हनोक के वंश के थे और "उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे" (4:26)। वे हनोक के वंश के थे जिन्होंने परमेश्वर के साथ चलने के द्वारा एक विश्वासयोग्य उदाहरण को स्थापित किया (5:24)।

पुराने और नए नियम दोनों में, परमेश्वर के लोगों को "परमेश्वर के पुत्र" के

रूप में संबोधित किया गया है। यह बात आदम (लूका 3:38), इस्राएल (निर्गमन 4:22, 23; यशा. 1:2, 4; यिर्म. 3:14, 22; होशे 11:1) और मसीहियों (गला. 3:26; 4:5) के लिए सत्य है। "परमेश्वर के पुत्र" आदम के समान, जो पाप में इसलिए गिर गया क्योंकि मना किया गया फल देखने में "अच्छा" ("सुंदर" या "चाहने योग्य" [טוֹב, *तोव* 3:6]) था, उसी प्रकार उसके कई वंशज भी परीक्षा में गिर गए। शेत के द्वारा "परमेश्वर के पुत्र" गम्भीर पाप में गिर गए क्योंकि वे "मनुष्यों की पुत्रियों" के प्रति आकर्षित हो गए थे। संभवतः "पुत्रियां" कैन के वंश की थी। "परमेश्वर के पुत्रों" ने उन्हें "सुंदर" (*तोव;* "अच्छा" या "चाहने योग्य") पाया और जितनों ने जितनो को चाहा, अपनी पत्नियां बना लिया।

समस्या यह नहीं कि ये स्त्रियां सुंदर थीं, परंतु उनकी यही सुंदरता ही उनके आकर्षण का कारण बना। वे आत्मिक नहीं थी, वे केवल "सांसारिक या भौतिक प्रवृति" की थीं जिनके बारे में हम यशायाह 3:16-4:1 और आमोस 4:1-3 में पढ़ते हैं।[7] उसी तरह "परमेश्वर के पुत्र" उन लोगों का प्रारंभिक उदाहरण है जो गलत कारणों से ब्याह करते हैं। उनको आत्मिकता या अपनी पत्नी के चरित्र की चिंता नहीं रहती। इसके विपरीत अपने अहंकारी घमण्ड के कारण, जिस बात को वे प्राथमिकता देते थे वह थी स्त्री की बाहरी सुंदरता और आशा करते थे कि प्रतिष्ठा, सामर्थ्य और शोहरत को वे सुंदर स्त्री ब्याहने से प्राप्त कर लेंगे। (देखें 6:4)। इन सभी बातों ने उन्हें परमेश्वर की मूल योजना एक पत्नी का पति होने की योजना से अलग कर दिया और उन्होंने लामेक की रीति अनुसार दो पत्नियों के उदाहरण से आगे बढ़कर जिसने जिस जिसको चाहा उन्होंने ब्याह लिया और इस प्रकार अनेक "पत्नियाँ" कर लीं।

आयत 3. यह आयत भी कई चुनौतियां प्रस्तुत करती है, जिसके लिए कई समाधान प्रस्तुत किए गए हैं। किंतु इस अध्ययन का विषय वस्तु हमें कुछ टिप्पणियों पर रोशनी डालने की अनुमति देता है।

यह आयत परमेश्वर के कथन से प्रारंभ होती है, **"मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है।"** "मेरा आत्मा" का क्या अर्थ है? यह तथ्य कि "आत्मा" רוּחַ *(रूआह)* को NASB[8] में बड़े अक्षरों में लिखा गया है जिसका तात्पर्य 1:2 के अनुसार परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति से है जहाँ "परमेश्वर का आत्मा" जल के ऊपर मंडराता था। क्योंकि इब्रानी भाषा में बड़े अक्षरों (जो परमेश्वर के आत्मा के लिए प्रयोग होता है) का प्रचलन नहीं है इसलिए कुछ अनुवाद यहाँ *रूआह* का अनुवाद "आत्मा" इस अभिप्राय के साथ करते हैं[9] कि यह जीवन देनेवाला परमेश्वर का सामर्थ्य है। CEV ने यहाँ "आत्मा" शब्द की बजाय "मेरा जीवन-दायक श्वास" लिया है। यह ईश्वरीय श्वास/आत्मा, चाहे मनुष्य हो या जानवर, सभी प्राणियों के लिए आवश्यक है। *रूआह* फिर से 6:17 और 7:15 में पाया जाता है जहाँ NASB में इसका अनुवाद "जीवन का श्वास" किया गया है। तीनों अनुच्छेद की घटनाएं बाढ़ के संदर्भ में लिखे गए हैं। इसलिए, "आत्मा" का हटाया जाना, संभवतः यह बताता है कि परमेश्वर ने अपने जीवन-देनेवाले श्वास या "आत्मा" को हटा लिया। जहाज़ में सवार मनुष्य एवं

जानवरों को छोड़कर, संसार के सभी मानवजाति एवं जानवरों से जीवन ले लिया गया।

दूसरी समस्या, יָדוֹן *(यादोन)* शब्द “संघर्ष करता रहेगा” के प्रयोग को लेकर है। पुराने नियम में इस शब्द का प्रयोग एक ही बार किया गया है और इस शब्द का मूल अनिश्चित है। NIV में इसका समतुल्य अर्थ “विवाद करना” प्रयोग किया गया है। विवाद करने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर मनुष्य के साथ निरंतर संघर्ष कर रहा था और उसको दण्डित करने और पाप त्याग कर अपने सृष्टिकर्ता की ओर वापस लौटने को चिता रहा था। ऐसा ही उसने कैन और उसके संतानों के साथ किया (4:1-24)।

जब *यादोन* का यह संभावित अनुवाद/अर्थ हो सकता है तो इस इब्रानी शब्द का “साथ रहेगा,” “रहना” दूसरा विकल्प है।[10] इसके साथ ही, जब परमेश्वर ने “मनुष्य” אָדָם *(आदम)* का संदर्भ दिया तो वह अनगिनत पीढ़ी में किसी एक व्यक्ति विशेष को संबोधित नहीं कर रहा था। वह सभी मानवजाति (जिसमें स्त्रियां भी शामिल हैं) और जो उस समय निवास कर रहे थे, को संबोधित कर रहा।

परमेश्वर का जीवन देनेवाला आत्मा मनुष्य के साथ “सदाकाल” तक नहीं रहेगा इसका कारण यह है कि “वह भी मांस और लहू है।” इब्रानी शब्द בָּשָׂר *(बासार)* “मांस” का अलग अलग अर्थ है और इसका प्रयोग उसी के संदर्भ में ही किया जाना चाहिए।[11] NIV यहाँ इसके लिए “मरणहार” अनुवाद करता है लेकिन यह अधिक उपयुक्त नहीं है। यह कैसे हो सकता है कि मनुष्य की मरणहार स्थिति ही ऐसा कारण है जिसके कारण परमेश्वर का आत्मा उसके साथ सदाकाल तक वास नहीं करेगा? परमेश्वर ने मनुष्य को मरणहार बनाया। वह मरणहार तब नहीं बना जब उसको जीवन के वृक्ष के पास जाने से रोका गया। बल्कि, वह तो पहले ही से मरणहार था और जीवन के वृक्ष से खाना तो उसको जीवित रहने का विकल्प था। मनुष्य को अदन की वाटिका से बाहर किया जाना उसके मरणहार होने का कारण नहीं था; वह तो पाप के कारण ऐसा हुआ। इसलिए जलप्रलय के संदर्भ में भी मानवजाति के साथ ऐसा ही होगा। मनुष्य की मरणहार स्थिति परमेश्वर के आत्मा का उससे अलग होने और जलप्रलय के आने का कारण नहीं है। बल्कि यह तो इसलिए हुआ क्यों मनुष्य नैतिक और आत्मिक रूप से दुर्बल, “शक्तिहीन” और “पापमय” है[12] और पाप के प्रति उसका झुकाव रहता है। इस संदर्भ में *बासार* का यही अर्थ निकाला जा सकता है।[13]

आयत 3 का शेष भाग यह पुष्टि करता है, **“उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।”** कुछ लोगों का मानना है कि परमेश्वर ने मनुष्य की आयु को उसके पाप तथा दुष्टता के कारण सीमित किया। क्या परमेश्वर ने जलप्रलय के बाद, ऐसा निर्णय लिया कि वह मनुष्य की आयु को 900 वर्ष के बजाय केवल 120 वर्ष तक सीमित करेगा जैसे कि अध्याय 5 में प्रलयपूर्व वर्णित है? यह दृष्टिकोण संसार में हो रहे तात्कालिक विनाश के संदर्भ में सत्याभास होता है। संभवतः परमेश्वर,

मनुष्य को उनके बुरे विचार और उनके बुरे कार्यों के कारण लंबे समय तक उनको सहन नहीं करेगा (6:5)।

दूसरा, 120 वर्ष नूह के जलप्रलय से पूर्व अनुग्रह का समय दर्शाता है जिसमें नूह "धर्म के प्रचारक" (2 पतरस 2:5) ने लोगों को परमेश्वर के आने न्याय के बारे चेताया कि वे अपने पापों से पश्चाताप करें (देखें 1 पतरस 3:19, 20)। एक प्राचीन यहूदी लेख इसे परख का समय बताता है: "एक समय उनके लिए मैं निर्धारित करूँगा, एक सौ बीस वर्ष, देखें कि वे पश्चाताप करते हैं कि नहीं।"[14]

यह उत्तरवर्ती विचारधारा अधिक मान्य है क्योंकि यह जलप्रलय के पश्चात व्यक्ति विशेष के व्यक्तिगत जीवन अवधि से अधिक मेल खाता है। कुछ लोग 120 वर्ष के समयावधि से भी अधिक आयु तक जीवित रहे। उदाहरण के लिए नूह 600 वर्ष का था जब धरती पर जलप्रलय आया (7:6) और वह 950 वर्ष तक जीवित रहा (9:29)। अब्राहम 175 वर्ष (25:7), इसहाक 180 वर्ष (35:28) और याकूब 147 वर्ष (47:28) तक जीवित रहा। यूसुफ 110 वर्ष तक जीवित रहा (50:26) और जब मूसा की मृत्यु हुई वह अभी ताकतवर था (व्यव. 34:7) और यहोशू 110 वर्ष तक जीया (यहोशू 24:29)। उत्तरवर्ती लोगों के समूह में केवल हारून ही 120 वर्ष के पार जीया (गिनती 33:39) और वह 123 वर्ष की अवस्था में मरा। यद्यपि, नूह के बाद मनुष्य की सामान्य आयु 120 वर्ष की होगी परंतु यह कुछ अपवाद के बाद धीरे धीरे लागू होगी।[15] दूसरी तरफ, कई अन्य तथ्य इस सच्चाई की ओर इंगित करते हैं कि पृथ्वी पर जलप्रलय भेजने से पहले, परमेश्वर ने मनुष्य को पर्याप्त समय दिया कि वे अपने पापों से पश्चाताप करें। समय के इस भाग में परमेश्वर लोगों को नूह के प्रचार से अपने पापों से पश्चाताप करने के लिए आह्वान देता है। इसके साथ ही, समय के इस भाग में नूह के परिवार को एक बड़ा जहाज़ बनाने के लिए समय चाहिए था (7:6, 7 की टिप्पणी देखें)।

आयत 4. उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे, एक दूसरी चुनौती खड़ी करता है। KJV इब्रानी शब्द נְפִלִים *(नेफिलिम)* को "दानव" अनुवाद करता है। यह LXX पर आधारित है जो इसे यहाँ और गिनती 13:33 में γίγαντες *(गिगान्टेस)* अनुवाद करता है। यह दूसरा स्थान है जहाँ *नेफिलिम* शब्द पाया जाता है। इस इब्रानी शब्द की उत्पत्ति विवादास्पद है किंतु संभवतः यह נָפַל *(नापाल)* क्रिया से संबंधित है जिसका अर्थ है "गिरना।" इस संदर्भ में इसका तात्पर्य "गिरे हुए"[16] है, "दानव" नहीं।

आज अक्सर नेफिलिम की पहचान दानव के रूप में क्यों की जाती है? यह गिनती 13:32, 33 में इस्राएलियों द्वारा कनान में रहने वाले लोगों के बारे में वर्णन से जुड़ा है। उनके शब्दों में संभवतः कुछ अतिशयोक्तियाँ पाई जाती है क्योंकि उन्होंने कहा कि जितने लोगों को उन्होंने वहाँ देखे वे "बहुत बड़े" थे। उन लोगों के तुलना में, इस्राएलियों ने अपने आपको "टिड्डियों" के समान पाया। दस भेदियों ने भय और अविश्वास के कारण, अपने और कनान में रहने वाले लोगों मध्य अंतर का वक्तव्य इस प्रकार दिया। तीमोथी आर. एशले के अनुसार,

“भेदियों का अपने आपको *टिड्डियां (हागाबीम)* कहना एक प्रकार का अलंकार है जिसे अर्धसूत्रण कहते है, जिसमें दूसरे की महत्ता या आकार बढ़ाई जाती है जबकि उसकी तुलना में पहला घटता जाता है।”[17]

हो सकता है कि इस्राएलियों का कनानियों के वर्णन में अतिशयोक्ति हो लेकिन यह “नेफीलिम” और विशाल आकार के संबंध का इनकार नहीं करती है। गिनती 13:33 “अनाक वंशी” और “नेफीलिम” के संबंध बताती है। “इब्रानी शब्द עֲנָק *(अनाक)* का मूल अर्थ “गर्दन” या “माला” है और धीरे धीरे अनाक शब्द एक जाति के नाम से संबंधित हुआ जिसका संभावित अर्थ ‘लंबी गर्दन वाले’ (दानव) है।”[18] दूसरे अनुच्छेद अनाकवंशी या रपाई वंश के विषय में यह बताती है कि वे लंबे थे (व्यव. 1:28; 2:10, 11, 20, 21; 9:2)। प्रतिज्ञा के देश पर विजय प्राप्त करते समय रपाई वंश का आखिरी शासक ओग था; जो अपनी विशालकाय लोहे की चरपाई के लिए जाना जाता है (व्यव. 3:11)।[19] अनाकवंशी, यरूशलेम से बीस मील दक्षिण में हेब्रोन के पड़ोस में रहते थे। उन पर कालेब तथा यहूदा के गोत्र ने विजय प्राप्त की थी (यहोशू 14:13-15; 15:13, 14; न्यायियों 1:20)। इस्राएल के राजाओं के शासनकाल में दाऊद ने गोलियत नामक फिलिस्तीनी दानव का सामना किया (1 शमूएल 17:4-7, 41)। इसके कुछ वर्षों में कुछ और दानवों का वर्णन किया गया है (2 शमूएल 21:16, 18, 20, 22; 1 इतिहास 20:4, 6, 8)।

हो सकता है कि 6:4 में नेफीलिम शारीरिक रुप से अति बलशाली थे लेकिन पाठ कुछ और भी महत्वपूर्ण आत्मिक बातों का विवरण करता है: उनके सामने पाप एक बहुत बड़ी समस्या थी। उनके नाम के अर्थानुसार, “पतित मनुष्यों” के समान उनके कार्य थे अर्थात उनका जीवन व्यवाहारिक बुराइयों के कारण गिरता जा रहा था।

नेफीलिम का वर्णन एक प्रसिद्ध समयकाल की ओर इंगित करता है। इसी समय **परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों को देखा** और उनसे **बच्चे** पैदा हुए (देखें 6:2)। कुछ अनुवाद नेफीलिम को इस जोड़े से उत्पन्न संतान मानते हैं (TEV; CEV; NLT; NJPSV),[20] लेकिन यह दुविधापूर्ण स्थिति है। पाठ केवल यही बताता है कि नेफीलिम (“परमेश्वर के पुत्रों” और “मनुष्यों के पुत्रियों”) के समकालीन थे।

यह आयत यह बताती है कि “उन दिनों पृथ्वी पर नेफीलिम [दानव] थे” और **उसके पश्चात भी थे**। वाक्यांश “उसके पश्चात” को दो प्रकार से समझा सकता है। इसका यह भी अर्थ निकाला जा सकता है कि नेफीलिम (दानव) एक लंबे समय तक पृथ्वी पर रहते रहे, संभवतः उस समय तक जब परमेश्वर ने पृथ्वी पर जलप्रलय भेजा। दूसरा अर्थ यह निकाला जा सकता है कि नेफीलिम (दानव) केवल जलप्रलय के पहले तक ही जीवित नहीं थे बल्कि उसके बाद भी जीवित रहे (देखें गिनती 13:33)। संभवतः पिछला अर्थ ठीक हो परंतु किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि बाद के नेफीलिम (दानव) प्रथम के वंश के ही थे। नूह के परिवार को छोड़कर पृथ्वी के सभी प्राणी जलप्रलय के समय मर गए थे।

आयत 4 इस प्रकार समाप्त होता है, **वे पुत्र शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है।** यहाँ पर सर्वनाम “वे” किस ओर इशारा कर रहा है? तीन संभावनाएं हैं, “बच्चे,” “परमेश्वर के पुत्र” और “नेफीलिम” (दानव)। सबसे अधिक संभावना यह है कि यहाँ यह नेफीलिम का वर्णन करता है। “शूरवीर” גִּבֹּרִים *(गिब्बोरीम)* शब्द योद्धाओं के लिए प्रयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए दाऊद के “शूरवीर” (2 शमूएल 10:7; 16:6; 20:7; 23:8-39)।चौथे वचन के शूरवीर, दाऊद के शूरवीर से, जो उसके तथा उसके राज्य के लिए लड़ा करते थे, से भिन्न थे क्योंकि जिनका यहाँ पर वर्णन है मानो वे अनुशासन रहित हैं जो केवल हत्या करना जानते हैं। वे “कीर्तिमान लोग” थे जिसका शाब्दिक अर्थ “सुनाम व्यक्ति” אַנְשֵׁי הַשֵּׁם *(अनेशे हाशशेम)* है। वे बलशाली लोग थे जो विनाशकारी कार्य के लिए प्रसिद्ध थे।

मनुष्य की दुष्टता और परमेश्वर का न्याय (6:5-7)

5और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। 6और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। 7तब यहोवा ने सोचा, कि मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं।

यह भाग धर्मविज्ञान की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यह (1) मनुष्य के हृदय में जलप्रलय से पूर्व क्या गुजर रहा था, (2) मनुष्य की दुष्टता के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण और (3) परमेश्वर का पृथ्वी को नाश करने का कारण का आदेश।

आयत 5. परमेश्वर ने देखा जैसे अभिव्यक्ति, मानव जाति के कार्य में परमेश्वर की इच्छा और हस्तक्षेप को प्रकट करने के लिए कई अनुच्छेदों पर प्रयोग किया गया है (देखें 29:31; निर्गमन 2:25; 3:4; 4:31)। ये शब्द परमेश्वर का 1:31 में दिए गए वक्तव्य का संस्मरण हैः “तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।” फिर भी, अंतर बड़ा नहीं हो सकता है; सहमति जताने के बजाय, उसने अब देखा कि **मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है**।

मनुष्य का यह व्यवहार अचानक असामान्य नहीं था; यह तो कई वर्षों से चला आ रहा उनका अभ्यास था, जो लेखक के अगले वक्तव्य से स्पष्ट हैः **उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है।** मनुष्य की ओर से इस प्रकार का पाप करना दुर्घटनावश या क्षणिक नहीं था; यह तो योजनाबद्ध, जानबूझकर और आदतन था। हर गुजरते पल, मनुष्य अपने मन में बुराई की ही कामना इस स्तर तक कर रहा था कि वह न केवल अपने आपको बल्कि अपने चारों ओर के सभी लोगों को नाश कर रहा था।

लेखक ने जलप्रलय का कारण उत्पत्ति 3 में मनुष्य के पतन को ठहराया। अदन की वाटिका में आदम और हव्वा ने "भले और बुरे" के ज्ञान की कामना की (3:5, 22)। उनका नया ज्ञान उनके लिए आशीष का कारण नहीं बल्कि उनके और उनके वंशजों के लिए दर्दनाक सिद्ध हुआ। मनुष्य का नए तरीके से पाप करने की प्रवृति ने, उसके अच्छे कार्य करने की इच्छा को आश्चर्यचकित कर दिया।

आयत 6. मनुष्य की दुष्टता के प्रति ईश्वरीय प्रत्युत्तर इस प्रकार हैः **यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया।** KJV में जिस प्रकार इस वचन को अनुवाद किया गया है उससे कुछ विद्वानों को कुछ आपत्ति हैः "यहोवा ने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाकर पश्चाताप किया।" जबकि बाइबल किसी दूसरे स्थान पर यह कहती है कि परमेश्वर के लिए पाप करना असंभव है; इसलिए, उसको पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं है। उसी तरह से हम गिनती 23:19 में हम यह पढ़ते हैं: "ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले" (देखें 1 शमूएल 15:29)। उत्पत्ति 6:6 में जो क्रिया प्रयोग किया गया है वह इब्रानी शब्द נָחַם *(नाहाम)* से लिया गया है। वस्तुतः, जब यह परमेश्वर के लिए प्रयोग किया जाता है तो इसका अर्थ "पश्चाताप" से अलग होता है, क्योंकि परमेश्वर कभी भी पाप का दोषी नहीं है। फिर भी यह सत्य है कि जो कुछ हुआ उससे परमेश्वर "दुःखी हुआ" (NIV), उसको "पीड़ा हुई" या "पछताया।"[21]

परमेश्वर मनुष्य के प्रति अपने दृष्टिकोण तथा योजनाओं को भी बदल सकता है, जो इस बात पर निर्भर होता है कि उसकी इच्छा के प्रति मनुष्य का क्या प्रत्युत्तर है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि परमेश्वर मनमौजी है बल्कि यह मनुष्य की ज़िम्मेदारी के प्रति उसकी प्रधानता को संबंधित करता है (देखें निर्गमन 32:12-14; 1 शमूएल 15:11, 22-29; यिर्म. 18:6-10; योना 3:4-10)। आदि में परमेश्वर की इच्छा यह थी कि वह मनुष्य को आशीष दे और उसने ऐसा ही किया (1:27, 28)। सब कुछ जो उसने बनाया वह "अच्छा" था (1:4, 12, 18, 21, 25) - बल्कि "बहुत अच्छा" था (1:31)। जब आदम और हव्वा ने सर्प की सुनकर पाप किया तो परमेश्वर की आशीष के साथ साथ, श्राप और पाप की मज़दूरी भी निर्धारित की गई (2:17; 3:14-19, 22-24)।

समय के बीतने के साथ साथ, मनुष्य इतना दुष्ट बन गया कि उसके विचार और कार्य लगातार बुरे होते गए। फलस्वरूप, **परमेश्वर अपने मन में पछताया**; अर्थात इस बात ने परमेश्वर के मन में एक बड़ी वेदना को उत्पन्न किया। इस कारण, उसने अपना मन बदला और इस पृथ्वी पर प्रलय पूर्व निर्णायक शारीरिक, श्रापः मृत्यु भेजी। पछताया या दुःखी हुआ, के लिए जो क्रिया यहाँ प्रयोग की गई है वह עָצַב *(आत्साब)* है जो *नाहाम* के लिए उत्पत्ति 6:6 में पर्यायवाची का कार्य करती है। यह "शारीरिक पीड़ा" के साथ-साथ "मन की पीड़ा" भी व्यक्त करता है;[22] परंतु दूसरा अर्थ जो परमेश्वर की पीड़ा से संबंधित है, का स्पष्ट रूप से यहाँ पर प्रयोग हुआ है।[23]

परमेश्वर का मनुष्य पर पछतावा इसलिए नहीं था कि सृष्टि कोई ईश्वरीय भूल थी। इस पछतावा का स्रोत तो मनुष्य के आचार, भ्रष्टता तथा पाप था जिसने परमेश्वर के स्वरूप को अपने आप ही हरा दिया। मनुष्य की सृष्टि कोई भूल नहीं थी यह तो उसने अपनी स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग करके आपने आपको क्रूर जंगली बना दिया। हमारा परमेश्वर, व्यक्तिगत परमेश्वर होने के कारण, जब उसके प्रिय उसके साथ विश्वासघात करते हैं, एक दूसरे का अनादर करते हैं और अपने लोगों का दुरुपयोग करते हैं तो उसको दुःख पहुँचता है (देखें होशे 11:1-8)। यही कारण है जिसने परमेश्वर के हृदय को बहुत दर्द और दुःख पहुँचाया।

आयत 7. इस स्थिति पर आकर परमेश्वर ने अपने निर्णय की उद्घोषणा की: **"मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं।"** "मिटा दूँगा" מָחָה *(माखाह)* का शाब्दिक अर्थ "साफ कर दूँगा"[24] है यह उस प्रकार है जिस प्रकार पुराने हस्तलेखों से स्याही मिटा या साफ कर दी जाती है। यह वही शब्द है जिसका प्रयोग मूसा ने इस्राएलियों के लिए परमेश्वर से विनती करते समय प्रयोग किया जब उन्होंने सोने की बछड़े की उपासना की थी। उसने परमेश्वर से यही विनती की थी वह उनके पाप क्षमा कर दे और कहा, "नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे!" (निर्गमन 32:32)। लोगों की दुष्टता के कारण जब परमेश्वर ने यहूदा और यरूशलेम नगर पर न्याय करने को ठानी तो उसने नगर को मिटा देने की ठान ली "मैं यरूशलेम को ऐसा पोंछूंगा जैसे कोई थाली को पोंछता है और उसे पोंछ कर उलट देता है" (2 राजा 21:13)।

मनुष्य के पाप के कारण परमेश्वर का दुःख इस वक्तव्य में जताया गया है कि उसका विनाश **क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा**। पृथ्वी की सृष्टि का क्रम परमेश्वर की मूल योजना से इतना बिगड़ गया था कि उसको सुधारा नहीं जा सकता था। जब प्रथम आदमी और स्त्री ने पाप किया तो सभी मानवजाति को इसका परिणाम: मृत्यु, भुगतना पड़ा। अतः, पृथ्वी मनुष्य के पाप के कारण इतनी दूषित हो गई थी कि जानवर, रेंगनेवाले जंतु और पक्षियों को भी जलप्रलय का सामना करना पड़ा ताकि वह पृथ्वी को मनुष्य के पाप से शुद्ध करे।

मनुष्य के हृदयबेधक निराशा के वर्णन के पश्चात 6:5-7 में एक आशा की किरण का उल्लेख किया गया है। यह अवलोकन कि "उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है" (6:5) पृथ्वी के सभी लोगों पर लागू नहीं होता है; नूह इस श्रेणी से बाहर था।

धर्मी नूह भ्रष्ट संसार का प्रतिरोधी (6:8-12)

8परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही। 9नूह की वंशावली यह

है। नूह धर्मी पुरूष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा। [10]और नूह से, शेम, और हाम, और येपेत नाम, तीन पुत्र उत्पन्न हुए। [11]उस समय पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी। [12]और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपनी अपनी चाल चलन बिगाड़ ली थी।

आयत 8. यह आयत **परंतु** से प्रारंभ होती है जो यह बताती है कि परमेश्वर ने **नूह** में कुछ गुण देखे जो दुष्ट संसार के अन्य लोगों से भिन्न था। **यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर थी**। NEB इसका अनुवाद इस प्रकार करता है, "नूह ने परमेश्वर का अनुग्रह जीत लिया था," इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह "धर्मी" और "निर्दोष" था (6:9)। इस अनुवाद से ऐसा लगता है कि नूह अपनी धार्मिकता के कारण परमेश्वर का अनुग्रह पाने के योग्य ठहरा, ऐसी विचारधारा गलत है। परमेश्वर कभी भी मनुष्य की धार्मिकता के कारण उस पर कृपा नहीं करता है। कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से धर्मी, निर्दोष या पाप रहित नहीं है (भजन 14:1-3; 130:3; नीति. 20:9; रोमियों 3:23)। उद्धार हमेशा ही परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है (रोमियों 4:1-5; इफि. 2:8-10)। कृपा के लिए חֵן *(हेन)* शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अनुवाद "अनुग्रह" भी किया जा सकता है क्योंकि यह "मुफ्त दिया जाता है।"[25] दूसरे शब्दों में, यह प्राप्तकर्ता के द्वारा कभी कमाया या उसके गुण के आधार पर पाया नहीं जा सकता है। पाठ कहता है कि "यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।" यह अनुग्रह ऐसा था जो नूह को पुरस्कार में मिला, यह ऐसा नहीं था जिसे उसने जीता हो या जिसे उसने अपने ही प्रयास से प्राप्त किया हो। फिर भी, वह अपने विश्वास के कारण परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करने की स्थिति में था।

आयत 9. यह भाग नूह के जीवन के गहन विश्लेषण से प्रारंभ होता है जो इस पुस्तक के प्रथम भाग उत्पत्ति 1-11 का केन्द्र बिंदु है। हमने 2:4 में इब्रानी शब्द תּוֹלְדוֹת *(टोलडोथ)* का अध्ययन किया है जिसका अर्थ "वंशावली," "विवरण" या "इतिहास" है परंतु NASB इस अनुच्छेद में इस शब्द का अनुवाद **अभिलेख** या "वंशावली" करता है। दोनों विचार उसके बाद आने वाले शब्दों में पाए जाते हैं, उदाहरण के लिए 6:9-11:32, नूह के वंश का अब्राहम के समय तक, वंशावली के साथ साथ ऐतिहासिक अभिलेखों का भी वर्णन करता है।

इस संदर्भ में, नूह, अपने समकालीन लोगों के बुराई के सामने एक **धर्मी पुरूष** के रूप में दिखाई देता है। आमोस के अनुसार कि वह धर्मी था का यह अर्थ है कि उसने लोगों के साथ न्याय किया। भविष्यवक्ता ने आमोस 5:24 में इस शब्द का पर्यायवाची के समान प्रयोग किया है, "परन्तु न्याय को नदी के समान, और धर्म महानद के समान बहने दो।" यह वक्तव्य उन लोगों के विरूद्ध अभियोग है जो गाली देते हैं, अत्याचार करते हैं और गरीबों का दुरुपयोग करते हैं (आमोस 5:11, 12)। मीका के अनुसार परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति से चाहता है कि वह "न्याय

से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले" (मीका 6:8)। इसको कहने का दूसरा तरीका यह है कि धार्मिकता परमेश्वर और मनुष्य के प्रति उचित दृष्टिकोण तथा कार्य करने की मांग करता है और यह नूह के जीवन के द्वारा साकार होता है। निश्चय, नूह ने "न्याय" (धार्मिकता) दिखाया और परमेश्वर के साथ एक नम्र कदम बढ़ाता रहा। बाद में नूह के धार्मिक कार्य की सराहना यहेजकेल 14:14, 20 में की गई और नए नियम में वह "धर्म का प्रचारक" कहलाया (2 पतरस 2:5)।

नूह अपने समय के लोगों के मध्य "निर्दोष" था जो परमेश्वर के संग संग चलता रहा। उसके निर्दोष होने का तात्पर्य उसका पाप रहित होना नहीं था। इब्रानी शब्द תָּמִים *(थामीम)* का अर्थ पाप रहित जीवन जीने या नैतिक रूप से सिद्ध होना नहीं है; इसका अर्थ एक व्यक्ति का समर्पण और परमेश्वर की अपेक्षा के अनुरूप "पूर्ण" या "संपूर्ण हृदय" का होना है।[26] यह आंतरिक प्रतिज्ञा का विचार कि संपूर्ण मन से परमेश्वर के प्रति समर्पित होना है को इस वक्तव्य से समर्थन मिलता है कि नूह एक ऐसा व्यक्ति था जो "परमेश्वर के संग संग चला।" इन सभी बातों को यदि एक साथ देखा जाए तो यह इस बात की ओर संकेत करता है कि नूह उच्च कोटि का खरा तथा ईमानदार व्यक्ति था। वह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य तथा अपने लोगों के साथ व्यवहार में खरा था। वह पृथ्वी पर फैले दुष्टों की चाल के विपरीत, अपने परमेश्वर के संग इस तरह चला मानो वह अपने चाल चलन के द्वारा अपने सृष्टिकर्ता को महिमा दे रहा हो।

आयत 10. यह आयत कहती है कि नूह से, शेम, और हाम, और येपेत नाम, तीन पुत्र उत्पन्न हुए (देखें 5:32)। यह बात थोड़ी सी आश्चर्य में डालती है कि उनका नाम यहाँ क्यों सम्मिलित किया गया है। इसका कुछ संभावित विश्लेषण इस प्रकार हैः (1) संभवतः लेखक, मनुष्यों की दुष्टता का वर्णन करने से पहले यह बताना चाहता हो कि नूह के तीनों पुत्र पृथ्वी के अन्य दुष्ट लोगों से भिन्न हैं। तब पाठक यह समझ लेंगे कि उनको जलप्रलय से क्यों बचाया गया। (2) संभवतः, लेखक नूह को आदम और तेरह से जोड़ना चाहता था, जिनके तीन तीन पुत्र थे और वे इतिहास के बहुत ही महत्वपूर्ण समय में जीए। (3) शेम, हाम और येपेत का संदर्भ, जलप्रलय के वृत्तांत की टूटी कड़ी को जोड़ती हैः नूह के पुत्र (6:10), जिन्होंने जहाज़ में प्रवेश किया (7:13), जलप्रलय से बच गए (9:18)। निश्चय वे परमेश्वर का भय मानते थे किंतु नूह उन सब में अलग था।

आयतें 11, 12. यह मूलपाठ यह बताता है कि **पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी**। 6:11-13 में "पृथ्वी" का वर्णन छः बार किया गया है। इन आयतों में इब्रानी शब्द שָׁחַת *(शाखत)* का तीन बार "भ्रष्ट" और एक बार "नाश करना" अनुवाद किया गया है। *शाखत* का अलग अलग संदर्भों में अलग अलग अर्थ बताया गया है, उदाहरण के लिए "बिगाड़ना," "बर्बाद करना" या "नाश करना" (देखें यिर्म. 13:7; 18:4; NIV)। आधुनिक अनुवादों में "पृथ्वी सहित" (6:13) मनुष्यों को "नाश" करने का परमेश्वर के निर्णय के रूप में इसका अनुवाद किया गया है क्योंकि लोगों ने इसे

"हिंसा/उपद्रव" से "भर दिया" था। यही शब्द *शाकात* का प्रयोग पृथ्वी की अवस्था बताने के लिए किया गया है - कि सभी लोग क्या कर रहे हैं - और परमेश्वर ने यह कैसे निर्णय लिया कि वह अपनी बनाई हुई सृष्टि पर दंड की आज्ञा दे। यह पुनरावृति इस बात की ओर इशारा करती है कि मनुष्यों को नाश करने की परमेश्वर की योजना "मनुष्यों ने अपने आप को पहले ही नाश कर दिया था" या फिर "पहले से ही वे अपने आपको नाश करने के प्रक्रिया में थे" पर आधारित है।[27]

पृथ्वी उपद्रव से भर गई थी की विडंबना को नहीं भूलना चाहिए। परमेश्वर की मूल इच्छा यह थी कि जानवर और मनुष्य "बढ़ें और सारी पृथ्वी पर भर जाएं" (1:22, 28)। बजाय इसके कि वे फूलने फलने के द्वारा पृथ्वी पर आशीष लाते, उन्होंने इसे "उपद्रव से भर" दिया और इसको विनाश के कगार पर ला दिया और जिसका दुःखभरा श्राप पृथ्वी पर निवास करने वालों को चुकाना पड़ा।

आयत 11 में חָמָס *(खामस)* शब्द, भयंकर विनाश, हत्या, बलात्कार, उत्पीड़न और अन्य कई प्रकार के नैतिक अपराध जो पृथ्वी को मलिन करती है, के लिए प्रयोग किया गया है और यह पापियों पर परमेश्वर का मृत्युदण्ड लाता है (6:11, 13; 49:5; न्यायियों 9:24; देखें लैव्य. 18:29; 20:11-18; यिर्म. 13:22)। इस प्रकार की जीवन शैली, ऐसे न्याय और धार्मिकता से घृणा करती है जिसका पालन नूह करता था और जिसका पालन करने की इच्छा सदा परमेश्वर अपने लोगों से करता है। (यिर्म. 22:3; यहेज. 45:9)।[28] भजन 11:5 में लेखक ने *हामास* को परमेश्वर की प्रकृति के विपरीत, बुरा और जिस प्रकार उसने मनुष्य को जीने के लिए बनाया है, का उल्लेख किया है। परमेश्वर इस प्रकार के जीवन से घृणा करता है और जो लोग ऐसा जीवन जीते हैं उनसे वह बदला लेता है (यहेज. 7:23, 24; 8:17, 18; 12:19, 20; 28:16; सप. 1:9)।[29]

परमेश्वर के जलप्रलय की उद्घोषणा और जहाज़ बनाने का निर्देश (6:13-22)

[13]तब परमेश्वर ने नूह से कहा, सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिये मैं उन को पृथ्वी समेत नाश कर डालूंगा। [14]इसलिये तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज़ बना ले, उस में कोठरियां बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल लगाना। [15]और इस ढंग से उसको बनाना: जहाज़ की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ, और ऊंचाई तीस हाथ की हो। [16]जहाज़ में एक खिड़की बनाना, और इसके एक हाथ ऊपर से उसकी छत बनाना, और जहाज़ की एक अलंग में एक द्वार रखना, और जहाज़ में पहिला, दूसरा, तीसरा खण्ड बनाना। [17]और सुन, मैं आप पृथ्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को, जिन में जीवन

की आत्मा है, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं: और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे। [18]परन्तु तेरे संग मैं वाचा बान्धता हूं: इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज़ में प्रवेश करना। [19]और सब जीवित प्राणियों में से, तू एक एक जाति के दो दो, अर्थात एक नर और एक मादा जहाज़ में ले जा कर, अपने साथ जीवित रखना। [20]एक एक जाति के पक्षी, और एक एक जाति के पशु, और एक एक जाति के भूमि पर रेंगने वाले, सब में से दो दो तेरे पास आएंगे, कि तू उन को जीवित रखे। [21]और भांति भांति का भोज्य पदार्थ जो खाया जाता है, उन को तू ले कर अपने पास इकट्ठा कर रखना सो तेरे और उनके भोजन के लिये होगा। [22]परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।

6:13-21 में नूह को दिए गए जलप्रलय वर्णन के चार में से पहला ईश्वरीय भाषण पाया जाता है।[30]

आयत 13. परमेश्वर ने **नूह** को संबोधित कर यह बताया कि **पृथ्वी** पर फैले **उपद्रव** ही बुरे लोगों और **सभी प्राणियों** को **नाश** करने का नैतिक कारण है। मानवजाति के विध्वंसकारी प्रकृति के कारण ही पृथ्वी पर परमेश्वर का न्याय तत्काल आने वाला था। जिस प्रकार आदि में प्रकृति और प्राणी जगत मनुष्य के पतन के कारण प्रभावित हुआ (3:17-19; देखें रोमियों 8:20, 21), उसी प्रकार अब वे मनुष्य के पाप के कारण उसका फल भुगतेंगे।

बाइबल का जलप्रलय का वृतांत, प्राचीन मेसोपोटामिया के भ्रष्ट जलप्रलय की कथा से एकदम भिन्न है। इनमें एक कथा यह है कि एक देवता ने अत्राहासिस को चेतावनी दी कि पृथ्वी पर एक प्रचंड जलप्रलय आने वाला है। इस जलप्रलय का कारण यह है कि मनुष्य अत्यधिक शोर मचा रहे हैं जिसके कारण देवता सो नहीं पा रहे हैं[31] - और यह मनुष्य के पाप के कारण नहीं है।

आयत 14. परमेश्वर ने पृथ्वी को नाश करने के उद्घोषणा के साथ ही कुछ चुने हुए लोगों को बचाने की योजना भी बनाई। नूह को एक विशेष प्रकार का जहाज़ बनाने का निर्देश दिया गया जिसमें ये चुने हुए सवार होकर पृथ्वी पर आने वाले जलप्रलय से बच सकें। NASB इब्रानी शब्द תֵּבָה *(थेबाह)*[32] का अनुवाद **जहाज़** करता है। यह शब्द उत्पत्ति 6-9 के मध्य एक बड़े जहाज़ के लिए छः बार प्रयोग किया गया है जिसमें जब पृथ्वी पर विनाशकारी जलप्रलय हुआ था तो नूह और उसका परिवार, उन जानवरों के साथ जिनको परमेश्वर ने बचाया था लगभग एक वर्ष तक रहे। इस शब्द का दूसरा प्रयोग एक छोटी नाव के रूप में निर्गमन 2:3, 5 में पाया जाता है जिसमें मूसा को उसकी माँ ने रखा था। फिरौन के आदेश कि सभी इब्री बालक को पैदा होते ही मार डालने के प्रकोप से बचाने के लिए उसको इस नाव में रखकर नील नदी के सरकंडे के बीच बहा दिया गया था।[33]

जो जहाज़ नूह ने बनाया था वह גֹּפֶר *(गोपेर)* की लकड़ी का बना था, यह अनुवादित शब्द नहीं है बल्कि मूल इब्रानी शब्द है। पुराने नियम में केवल यही स्थान है जहाँ इस शब्द का प्रयोग किया गया है। इस शब्द को यूनानी शब्द

κυπάρισσος *(कुपारिसोस)* से भी संबंधित किया जा सकता है जो कुप्रुस टापू के नाम पर आधारित है और जिसका अर्थ "सनोवर" (NIV; NEB; NRSV) है। इस प्रकार के वृक्ष की लकड़ी जल रोधी होती है अतः प्राचीन मध्य पूर्व में इसका प्रयोग गृह, जहाज़, ताबूत, फर्नीचर, वाद्य यंत्र इत्यादि के निर्माण में किया जाता था।[34] जहाज़ निर्माण के लिए यह बहुत मज़बूत लकड़ी थी।

जहाज़ को **कमरों** קִנִּים *(कीनीम)* या "कक्षों" (NJPSV) में बांटना था। पुराने नियम के दूसरे स्थानों में इस शब्द का प्रयोग पक्षियों के "घोंसले" के लिए प्रयोग किया गया है जिसमें कि वे अपने छोटे बच्चे रखें। इसलिए, *कीनीम* को, नूह के परिवार तथा जानवरों के लिए कमरे या कक्ष के रूप में समझा जा सकता है, लेकिन यदि यह पक्षियों, जिनको जहाज़ में लिया जाना था, के संदर्भ में प्रयोग करें तो यह घोंसला ही समझा जाएगा। जहाज़ को **राल** כֹּפֶר *(कोपेर)* से लेपकर जल रोधी बनाना था। इस आयत में *गोपेर* और *कोपेर* शब्दों का ताना बाना देखा जा सकता है: प्रथम शब्द लकड़ी के लिए प्रयोग किया गया है जिसको जहाज़ बनाने में प्रयोग किया जाना था जबकि दूसरा उस तरल द्रव्य के लिए प्रयोग किया गया है जिससे उसको लेपा जाना था।

आयत 15. जहाज़ का निर्माण इस माप के अनुसार किया जाना था: **जहाज़ की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ, और ऊंचाई तीस हाथ की हो**। प्राचीन संसार में हाथ (क्यूबिट) אַמָּה *(अम्माह)* का कोई निश्चित मानक नहीं था; इसकी माप हाथ की कोहनी से लेकर तर्जनी की सिरे तक होती थी, जो सभी व्यक्तियों में एक सी नहीं होती थी, विशेषकर अलग-अलग समय तथा स्थान पर अलग-अलग होता था। आमतौर पर इसकी माप अठारह इंच के बराबर मानी जाती है। यदि ऐसा है तो जहाज़ की लंबाई लगभग 450 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई 45 फुट की रही होगी। स्पष्ट रूप से, जहाज़ आयताकार था और जिसका तला सपाट तथा दोनों किनारे वर्गाकार थे। यह एक प्रकार का तैरने वाला नौका था जिसका ढांचा ऐसा बनाया गया था जो आसानी से जलप्रलय के पानी से बच सकता था। जबकि इस प्रकार का जहाज़ प्रलय से पूर्व के संसार के लिए अति विशाल था, लेकिन इसका आयतन प्राचीन बाबूल की किंवदंती *दी एपिक आफ गिलगामेश* में वर्णित काल्पनिक जहाज़ से पाँच गुना कम था।[35] जहाज़ बनाने वाले यह मानते हैं कि नूह का जहाज़ समुद्र में तैरने कि हिसाब से बिल्कुल ठीक था जबकि बाबूल का जहाज़ (जो ऐसा माना जाता है कि वह घनाकार था और उसकी प्रत्येक सिरे की माप 180 फुट थी[36]) संभवतः जलप्रलय से नहीं बच सकता था।

आयत 16. इस आयत के प्रथम भाग को समझना कठिन है क्योंकि इब्रानी बाइबल में खिड़की צֹהַר *(त्सोहर)* केवल इसी भाग में पाया जाता है। इस शब्द का अनुवाद "रोशनी" (ASV), "छत" (NIV; RSV; NRSV; NEB) और "रोशनदान" (NJPSV) किया गया है। आखिरी वाला अनुवाद दो संभावनाओं का मिलन है, "रोशनी" और "खिड़की।" फिर भी *त्सोहर* का अर्थ "खिड़की" है तो सामान्य इब्रानी शब्द 8:6 की भांति חַלּוֹן *(खालोन)* क्यों नहीं प्रयोग किया गया

है जहाँ यह लिखा है कि नूह ने खिड़की खोली? इसी प्रकार की एक और आपत्ति *त्सोहर* "छत" के अनुवाद को लेकर है। बाइबल के लेखक ने "छत" के लिए साधारण शब्द גַּג *(गाग)* को छोड़कर एक ऐसे शब्द का प्रयोग क्यों किया जिसका अर्थ अस्पष्ट है?

संभवतः *त्सोहर* शब्द से उत्पत्ति के लेखक के समकालीन लोग अधिक परिचित थे। वचन के शेष भाग से इसके गायब होने का कारण यह हो सकता है कि इसकी जगह *गाग* शब्द का प्रयोग किया गया है जो सामान्य इब्रानी भाषा में बहुत प्रचलित हो गया था। इस शब्द का ठीक-ठीक विश्लेषण नहीं दिया जा सकता है; यदि *त्सोहर* का ठीक-ठीक अनुवाद किया जाए तो इसका अर्थ "एक खुला स्थान" हो सकता है जो छत से लगभग एक हाथ की दूरी पर जहाज़ के चारों ओर था जो केवल छत को संभालने वाले डंडों से बाधित होता था। यदि *त्सोहर* का अर्थ "छत" है तो इसका निर्माण इस प्रकार किया गया होगा जो छत और **जहाज़** के ऊपरी छोर के बीच से एक हाथ के नीचे (रोशनी के लिए) वर्षा जल को बाहर निकालने के लिए बनाया गया होगा।[37]

मूल पाठ, **जहाज़ के अलंग पर दरवाजे का** भी वर्णन करता है जो जलप्रलय से पूर्व जहाज़ में प्रवेश करने का द्वार था (7:13-16) और जब पृथ्वी सूख चुकी होगी तो जहाज़ के सभी प्राणी इसमें से निकलकर अपने-अपने निवास स्थान में जा सकते थे (8:13-19)। मूल इब्रानी पाठ में जहाज़ के तीनों खण्डों का स्पष्ट विश्लेषण नहीं दिखाई देता है परंतु लेखक ने जहाज़ के तीनों खण्डों का वर्णन दूसरे प्रकार से किया है। इसका शाब्दिक अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है निचली वाली, दूसरी वाली और तीसरी वाली। इस प्रकार का विश्लेषण प्राचीन बाबूल की दंतकथा में वर्णित नूह (उतनापिश्तिम) के समकक्ष जहाज़ से भिन्न है जिसके बारे में कहा गया है कि उसमें "सात तल और प्रत्येक तल में नौ खण्ड थे।"[38]

आयत 17. आने वाले जलप्रलय की घोषणा के पूर्व **सुन** शब्द का प्रयोग किया गया है कि लोगों ध्यान आकर्षित करे कि प्रभु क्या करने वाला है। उसने यह योजना बना ली थी कि वह **पृथ्वी पर जलप्रलय लाने वाला है**। जलप्रलय מַבּוּל *(माबूल)* केवल उत्पत्ति 6-9 में ही नूह के जलप्रलय के संदर्भ में प्रयोग किया गया है और भजन 29:10 ("जलप्रलय के समय यहोवा विराजमान था") यह इंगित करता है कि प्रकृति और सृष्टि पर यहोवा का पूर्ण नियंत्रण है। परमेश्वर, जिसने पृथ्वी तथा उसमें रहने वाले सभी जीवित प्राणियों की सृष्टि की, के पास सभी प्राणियों को जिनमें जीवन का श्वास है, को नाश करने का संपूर्ण अधिकार है क्योंकि मानव जाति ने "पृथ्वी पर अपनी चाल चलन बिगाड़ ली थी" (6:12)। इस अध्याय के आरंभिक भाग में "सब प्राणियों" (6:12, 13) का तात्पर्य "सब मानवजाति" से है; लेकिन यहाँ सभी मानव जाति और सभी जानवर सम्मिलित हैं (देखें 7:21; 9:11, 15-17) जिनमें "जीवन का श्वास" רוּחַ חַיִּים *(रूआख खाय्यिम)* है। **आकाश के नीचे**, "पृथ्वी के ऊपर" के लिए एक काव्यात्मक

अभिव्यक्ति है जो इस बात पर ज़ोर देती है कि **जो कुछ भी पृथ्वी पर है वे** [शीघ्र] **नाश होने वाले हैं**।

जलप्रलय सृष्टि की रचना का उलटाव है। परमेश्वर अब पृथ्वी और उसमें रहने वाले सभी प्राणियों के शत्रु के रूप में दिखाई देता है। हाँ, यही सब कुछ नहीं है, उसने इसको इसलिए नाश किया ताकि वह उसकी नई शुरूआत के साथ पुनर्निर्माण कर सके।

आयत 18. इसके बावजूद कि परमेश्वर "सब प्राणियों" के साथ क्या करने वाला है वह नूह के साथ **वाचा बांधेगा**। पुराने नियम में यह पहला स्थान है जहाँ "वाचा" בְּרִית *(बेरिथ)* का वर्णन किया गया है। इस वाचा के अंतर्गत सबसे प्राथमिक आशीष यह है कि वह (परमेश्वर) नूह, **उसकी पत्नी**, टे और उसके उसके **बेटों की पत्नियों** को बचाएगा। उन्हें **जहाज़ में प्रवेश करना** था जो पृथ्वी पर आने वाले जल के तीव्र थपेड़ों से उनके जीवन को सुरक्षित रखेगा (देखें 7:7)। संभवतः इस वक्तव्य का यहाँ वास्तविक अनुवाद जलप्रलय के पश्चात इस वाचा के आरंभ होने की संभावना में किया जा सकता है (9:1-17)।

आयतें 19, 20. इसके साथ ही नूह और उसके परिवार के द्वारा मानव जाति के बच जाने के साथ ही परमेश्वर की यह इच्छा प्राणी जगत को भी बचाने की थी। **सभी जीवित प्राणियों** को सुरक्षित रखना था। परमेश्वर ने नूह को यह निर्देश दिया कि वह **एक-एक जाति के दो दो, अर्थात एक नर और एक मादा** (पक्षियों समेत) और **सभी रेंगने वाले प्राणी जहाज़ में ले जा कर, अपने साथ जीवित रखे**। इनमें से सभी प्राणी उसके पास जहाज़ पर आएंगे कि उनको बचाया जा सके। नूह को इन प्राणियों को फंदे में फंसाकर या उनका पीछा कर पकड़कर नहीं लाना था। परमेश्वर ने उनके अंदर के सहज ज्ञान को जगाया कि ये मनुष्य से निम्न प्राणी अपने प्राकृतिक आवास को छोड़कर सुरक्षा के लिए जहाज़ में प्रवेश करें। परमेश्वर सभी प्राणियों, मानव जाति और जानवरों के प्रतिनिधियों को सुरक्षित रखना चाहता था जिनके बारे में उसने सृष्टि के आरंभ में "बहुत अच्छा" कहा था (1:31)।

नर और मादा का संदर्भ यह बताता है कि परमेश्वर ने प्रजनन का जो वरदान जानवरों और मनुष्यों (1:22, 27, 28) को दिया था, वह मनुष्यों की दुष्टता के बावजूद भी जारी रहेगा। सभी प्राणी, जो भविष्य की पृथ्वी की आशा है, उनको जहाज़ में एक साथ एक वर्ष से अधिक इस आशा से सवार होना था कि जलप्रलय के पश्चात परमेश्वर फिर से नई सृष्टि प्रारंभ करेगा। जल में रहने वाले जंतुओं को अपनी सुरक्षा के लिए जहाज़ में प्रवेश की आवश्यकता नहीं थी।

आयत 21. परमेश्वर ने नूह को यह आदेश भी दिया था कि वह **भांति-भांति के खाद्य पदार्थ** जहाज़ में रखे। यह खाद्य पदार्थ जलप्रलय के समय नूह और जहाज़ के सभी प्राणियों को जीवित रखेगा। यह ज्ञात नहीं है कि क्या नूह और उसके परिवार के लोगों तथा मांसाहारी जानवरों ने मांस खाया या नहीं। कुछ लोगों का यह विचार है कि शुद्ध प्राणियों के सात जोड़े (7:2) जबकि अशुद्ध प्राणियों केवल दो जोड़े ही जहाज़ में रखे गए। इसका कारण यह है कि जो शुद्ध

जानवर हैं वे नूह और उसके परिवार और मांसाहारी जानवरों के लिए जलप्रलय के समय भोजन के लिए रखे गए थे। यह भी तर्क दिया जाता है कि जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो परमेश्वर ने एक जानवर मारकर उसके चमड़े से उनके तनों को ढांका (3:21) तो प्रथम जोड़े ने संभवतः इस मारे गए जानवर का मांस खाया इसके बजाय कि उसको भूमि पर सड़ने के लिए छोड़ देते। हाबिल के माता पिता के अदन की वाटिका (4:2-4) से निकाले जाने के बाद जब उसने अपने जानवरों के पहलौठों में से परमेश्वर के लिए भेंट चढ़ाई तो संभवतः मनुष्यों ने बलि किए गए जानवरों के मांस में से कुछ हिस्सा खाया होगा। बाद में इसका पालन मूसा के व्यवस्था में किया जाता था, सिवाय पापबलि (जिसमें एक हिस्सा याजक के घर भेजा जाता था, परंतु वह बलि चढ़ाने वाले के घर नहीं भेजा जाता था) और होमबलि को छोड़कर। होमबलि पूर्ण रूप से परमेश्वर को समर्पित होती थी और उसको वेदी पर जला दिया जाता था। ये सारे सुझाव केवल संभावनाएं हैं, वे केवल अटकलें हैं क्योंकि इसके संबंध में मूल पाठ को छोड़कर हमारे पास और अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। लोगों को अपने सामान्य भोजन के बदले मांस खाने का आदेश जलप्रलय के बाद ही मिला (9:2, 3)।

आयत 22. लेखक ने बार-बार नूह की आज्ञाकारिता पर अतिरिक्त बल दिया है। जैसा उसने कहा, वैसा **नूह ने किया; यहोवा की जो भी आज्ञा दी, उसके अनुसार नूह ने किया** (देखें 7:5)। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने भी नूह के परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण को सराहा है: “विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज़ बनाया ...” (इब्रा. 11:7)। बाइबल केवल परमेश्वर का नूह को आदेश के बारे में बताता है परंतु यह जहाज़ को बनाने में लगा समय, पेड़ों/लकड़ी को काटने में लगा खर्चा, जहाज़ निर्माण के स्थान तक इनको ले जाने, बड़े तनों को काटकर छोटा करना और जहाज़ बनाने में इनको जोड़ने इत्यादि में कितना खर्चा आया होगा, इसके बारे में कुछ भी नहीं बताता है। यह वृतांत इस संबंध में बिल्कुल शांत है कि नूह और उसके परिवार ने इस बड़े कार्य को समाप्त करने में कितना परिश्रम किया होगा या फिर कितना धन व्यय किया होगा। जहाज़ के दरारों को बंद करने के लिए उन्होंने इतने ढेर सारे लार कहाँ से प्राप्त किए? इतने ढेर सारे जानवरों तथा मनुष्यों के लिए ढेर सारा भोजन, जो समुद्र में जहाज़ पर लगभग एक वर्ष तक थे, कहाँ से जमा किए?[39]

यह कार्य स्तब्ध करने वाला था और नूह और उसके परिवार को यह कार्य समाप्त करने के लिए कई वर्ष लगे होंगे। जहाज़ को बनाने में लगा सारा परिश्रम और मेहनत और उसके लिए ज़रूरत के संसाधनों को जुटाने के मध्य नूह के हृदय में उन लोगों के लिए भी जगह थी जो उसके चारों ओर रहते थे। इसलिए पतरस ने उसको, “धर्म के प्रचारक नूह” करके संबोधित किया (2 पतरस 2:5)। जब वह जहाज़ बनाने के कार्य में जुटा था तो वह आने जाने वालों से विनती करता होगा कि वे अपनी दुष्टता से मन फिराएं और परमेश्वर की ओर फिरें, कहीं ऐसा न हो कि वे पृथ्वी पर आने वाले विनाशकारी जलप्रलय से नाश हो जाएं। क्योंकि उस

समय के लोगों ने नूह के अनुसार वर्णित जलप्रलय नहीं देखा था तो लोगों ने उसका मजाक उड़ाया और वे अनाज्ञाकारी रहे "जब तक जल प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया" (मत्ती 24:39)। फिर भी, नूह विश्वासयोग्य बना रहा और उसके विश्वास ने उस अनदेखे विनाश को साक्षात् आते हुए देखा। उत्पत्ति के लेखक ने इस पूर्वज द्वारा आने वाले जलप्रलय की तैयारी करने के बारे में सुयोग्य सारांश लिखा: "परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।"

अनुप्रयोग

पाप की विकरालता (अध्याय 6)

क्या पृथ्वी को इस प्रकार की विनाश की आवश्यकता थी या फिर परमेश्वर ने एक दिन क्षणिक क्रोध में आकर इस पृथ्वी पर जलप्रलय भेजने की ठानी? परमेश्वर का कई प्रकार का चित्रण प्रस्तुत किया गया है - जैसे "जल उठने वाला और बदला लेने वाला" (नहूम 1:2) - परंतु वह गुस्सैल नहीं है। वह झक्की या मूडी नहीं है। "न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है" (याकूब 1:17)। पूरी बाइबल में ईश्वरीय बदला और क्रोध, हमेशा पाप, दोष, अनाज्ञाकारिता और विद्रोह से जुड़ा हुआ है।[40] परमेश्वर अपनी धार्मिकता के अनुसार पाप को दंडित किए बिना यूँ ही नहीं जाने देता है।

संसार की दुष्टता.

1. जलप्रलय उस संसार में आया जहाँ विवाह भ्रष्ट हो चुका था। परमेश्वर का विवाह का मूल उद्देश्य एक पुरूष और एक स्त्री को पति और पत्नी करके जोड़ना था। उन्हें जीवन भर सच्चे जोड़े, साथी और सहयोगी बने रहने चाहिए था और उन्हें अपने बच्चों के लिए सुरक्षित और प्रेममय घर का वातावरण बनाना था जहाँ उनके बच्चों का पालन पोषण किया जा सके जिसमें वे अपने माता पिता का आदर करें और परमेश्वर को महिमा दें (1:27, 28; 2:18-25)। कैन का अपने भाई हाबिल की हत्या के साथ ही घर की स्थिति विघटित होने लगी थी (4:1-8) और यह आगे और भी बिगड़ गई जब कैन के एक वंशज लेमेक बहु पत्नी वाला बन गया (4:19)।

विवाह में भ्रष्टाचार जलप्रलय के पहले तक जारी रहा, जब "परमेश्वर के पुत्रों [संभवतः शेत के वंश] ने मनुष्य की पुत्रियों [संभवतः कैन के वंश] को देखा, कि वे सुन्दर हैं; सो उन्होंने जिस जिस को चाहा उन से ब्याह कर लिया" (6:2)। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि शेत के सभी वंश धर्मी थे या कैन के सभी वंश अधार्मिक या दुष्ट थे। शेत के वंश के पुरूष एक से अधिक पत्नियां करने लगे। यह उनके लिए एक सामान्य बात होने लगी। उनके विवाह करने का आधार उनके साथी के चरित्र व आत्मिक गुणों पर आधारित नहीं था बल्कि यह उनके शारीरिक आकर्षण पर आधारित था। बेशक इन सारी बातों ने समाज में चरम प्रतिस्पर्धा, दुरुपयोग और झगड़े पैदा किए।

2. जलप्रलय उस संसार में आया जहाँ बहु पत्नी विवाह से पैदा हुए संतानों ने हिंसा और हर प्रकार के दुष्टता का मार्ग अपनाया। उनका पालन पोषण उस वातावरण में हुआ जहाँ सुंदर पत्नियों की चाह की प्रतिस्पर्धा होने लगी। संभवतः ऐसे विवाह से पैदा हुए संतानों में परस्पर सुंदर पत्नियों एवं अन्य चीजें पाने के लिए हिंसा होने लगा। पतन इतना अधिक हो गया था कि वृतांत यह बताता है "उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है" (6:5)। यहाँ यह भी लिखा है कि, "पृथ्वी उपद्रव से भर गई" (6:11)।

जबकि 6:4 हमें यह नहीं बताया गया है कि नेफीलिम किस प्रकार का पाप करते थे, परंतु यह सत्य है कि उन्होंने उन सभी नैतिक नियमों को तोड़ा जो मनुष्य की सृष्टि से ही उनके मन में डाली गई थी (रोमियों 2:14, 15) जो बाद में दस आज्ञाओं में लिखी गई (निर्गमन 20:3-17)। मनुष्य न केवल जानवरों के समान जीने लगे बल्कि उन्होंने वे कुकृत्य किए जो जानवर भी नहीं करते और उन्होंने समाज में विध्वंस पैदा किया। इस कारण वे "शूरवीर" और "सुनाम व्यक्ति" (शाब्दिक रूप से "प्रसिद्ध व्यक्ति"; 6:4) कहलाए। वे अपने समाज के बहुबली थे जिनकी चर्चा बुरे कार्य तथा हिंसा के लिए होती थी कि उन्होंने अपने आपको और अपने चारों तरफ के वातावरण को "भ्रष्ट" (या "बर्बाद") कर दिया था (6:11, 12)। उन्होंने मनुष्य और सृष्टि की रचना में परमेश्वर के मूल उद्देश्य, कि जीवन भर उनको आशीष दे, को व्यर्थ ठहरा दिया (1:24-31)। संसार में आशीष का कारण होने के बजाय उन्होंने हर प्रकार की बुराई को धरती के निवासियों के बीच पनपने दिया।

परमेश्वर का न्याय और अनुग्रह.

1. जलप्रलय उस संसार में आया जिसको परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ा। परमेश्वर ने चारों तरफ जो बुराई देखी उससे उसका मन बहुत दुःखी हुआ। यह ठीक उसी तरह हुआ जैसे कि एक प्रेमी माता पिता अपने बच्चों के जीवन में विनाशकारी व्यवहार देखते हैं तो वे अत्यंत दुःखी हो जाते हैं। क्योंकि मानवजाति के लिए परमेश्वर का प्रेम, एक माता पिता का अपने बच्चों के प्रति प्रेम से कहीं बढ़कर है तो जब वह अपने लोगों की दुष्टता को देखता है तो उसे कितना अधिक दुःख होगा! जैसे एक व्यक्ति बुरे विचार करता है और जो कुछ बुरे विचारों की वह कल्पना कर सकता है उसको वह करता है तो परमेश्वर का धर्मी हृदय भी दुःखी होता है (6:5-7; होशे 11:1-8)। इस कारण परमेश्वर ने इस पृथ्वी पर नूह के दिनों में न्याय की घोषणा जल प्रलय भेजने के द्वारा की (6:13, 17)।

परमेश्वर का क्रोध, जो पापियों को दंडित करता है, को समझने के लिए हमें उसके प्रेम और पवित्रता की पृष्ठभूमि में उसके प्रतिशोध/बदले का अध्ययन करना होगा। परमेश्वर पाप को महत्वहीन जानकर उसे अनदेखा नहीं करता है और न ही वह मनुष्य को दण्डाभाव बताकर पाप करने देता है। उसे बुरे कार्य करने वाले के विरूद्ध, जो बुरे कार्य में विलुप्त हैं, न्याय करना चाहिए। कभी कभी क्रोध और प्रेम एक दूसरे के विरोधी दिखाई देते हैं। लोग पूछते हैं, "यदि परमेश्वर का

प्राथमिक गुण प्रेम है तो वह ऐसा परमेश्वर कैसे हो सकता है जो पापियों पर अपना क्रोध उण्डेले?" क्रोध, प्रेम का विलोम नहीं है; प्रेम का विलोम तो पाप के प्रति उदासीनता है।

यदि पति अपनी बेवफा पत्नी की बेवफाई के प्रति लगातार उदासीन रहे तो उसके मित्र इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि वह अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता है। इस प्रकार का अनुमान लगाने में वे ठीक ठहरेंगे! यदि वह सचमुच अपनी पत्नी से प्रेम करता है तो वह अपनी पत्नी के बेवफाई के प्रति धर्मी क्रोध से भर जाएगा। उसका क्रोध ठीक ठहराया जाएगा क्योंकि सृष्टि के प्रारंभ से ही परमेश्वर का इरादा यह था कि विवाह एक पुरूष और एक स्त्री के बीच व्यक्तिगत घनिष्ठ संबंध ठहराया जाए। इस प्रकार का बंधन किसी भी प्रतिद्वंदी को नहीं बर्दाश्त कर पाएगा।

परमेश्वर का मनुष्य के साथ संबंध विवाह के अनुरूप पाया जाता है; वह किसी प्रकार का विश्वासघाती कार्य जो उसके लोगों के ईश्वरीय स्वरूप को नुकसान पहुँचाता हो या उनके सृष्टिकर्ता की पवित्रता और चरित्र पर दाग लगाता हो, को बर्दाश्त नहीं करेगा। विवाह के समान, परमेश्वर, मानवजाति के साथ व्यक्तिगत संबंध रखना चाहता है। इस संबंध में वह दूसरे प्रेमी (देवताओं) को घुसने की अनुमति नहीं देगा; और जब मनुष्य दूसरे देवताओं (चाहे वास्तविक या काल्पनिक हो) को अपनी निष्ठा दिखाएगा तो परमेश्वर ईश्वरीय जलन से क्रोधित हो उठता है (निर्गमन 20:5)।

हमारे प्रेमी परमेश्वर ने हमें बनाया है, वह सभी को जीवनदान देता है और सभी प्रकार की आशीषों से आशीषित करता है (याकूब 1:17), और उसकी यह इच्छा है कि वह प्रत्येक व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत संबंध रखे, यहाँ तक कि उनके साथ भी जो उससे परिचित नहीं हैं। अनकने के लोगों को पौलुस ने बताया कि एक सच्चा व्यक्तिगत परमेश्वर है और "वह हम में से किसी से दूर नहीं है" (प्रेरितों 17:27), वह अरस्तू का अवैयक्तिक "अचल प्रवर्तक" सृष्टिकर्ता नहीं है।[41] पौलुस ने दावा किया कि "हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं" (प्रेरितों 17:28)। क्योंकि हम परमेश्वर द्वारा सृजे गए हैं तो हम जिस प्रकार का जीवन जीते हैं उसके प्रति स्वयं उत्तरदायी हैं।

यह बात घमंडी मनुष्य नहीं सुनना चाहता है और कुछ को तो यह उचित भी नहीं लगेगा। फिर भी, हम नैतिक प्राणी हैं जो उसके स्वरूप में रचे गए हैं और परमेश्वर ने अपनी विधियाँ हमारे हृदय पटल में लिख डाली है (रोमियों 2:14, 15)। जब हम घृणित पाप और अपराध करते हैं तो हम उसके सम्मुख "निरुत्तर" हैं (रोमियों 1:20) और "मृत्युदण्ड के योग्य" हैं (रोमियों 1:32)। इसलिए पौलुस को परमेश्वर का मनुष्य से अपेक्षा की घोषणा करनी पड़ी कि "हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराए," क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है" (प्रेरितों 17:30, 31)। वस्तुतः यह वही संदेश है जिसे परमेश्वर ने नूह को दिया था: "दुष्टों पर

जलप्रलय दे द्वारा न्याय किया जाएगा, इसलिए एक धर्मी पीढ़ी को बचाने के लिए एक जहाज़ बनाया जाए" (देखें 6:13-21)।

2. जलप्रलय उस संसार में आया जिस पर परमेश्वर का न्याय और अनुग्रह की घोषणा की गई थी। उत्पत्ति का वृतांत यह बताता है कि नूह संसार के पाप और पतन के बीच एक "धर्मी" और "निर्दोष" मनुष्य था और उसने "यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि पाई" (6:8, 9)। इस प्रकार का "अनुग्रह" חֵן *(हेन)* वर्णित सीमा से बाहर की बात है; यह ऐसा अनुग्रह है जिसे न तो कमाया जा सकता है और न ही इसकी कामना की जा सकती है। नूह को संसार के पतित मनुष्य के बीच पाकर, परमेश्वर ने उससे स्नेह किया। उसने नूह पर यह प्रकट किया कि वह पृथ्वी पर रहने वालों को जलप्रलय से नाश कर डालेगा और उसने नूह और उसके परिवार के लिए और उन जानवरों के लिए जिनको वह उस जहाज़ में रखने वाला था बचाने के लिए जो योजना बनाई थी उस पर प्रकट किया।

जहाज़ बनाने के कार्य के साथ ही, नूह को "धार्मिकता के प्रचारक" के रूप में भी नियुक्त किया गया (2 पतरस 2:5), जो अधार्मिक संसार को पश्चाताप के लिए आह्वान देता है जिससे कि आने जलप्रलय को टाला जा सके। यह परमेश्वर के धीरज और कृपा को दर्शाता है। वह नहीं चाहता है कि "कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)। बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि नूह ने ठीक कितने समय तक प्रचार किया या फिर जहाज़ बनाने में कितना समय लगा, लेकिन वृतांत यह अवश्य बताता है "जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धर कर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए" (1 पतरस 3:20)।

हालांकि मूल पाठ हमें यह नहीं बताता है कि लोगों ने नूह के प्रचार का कैसे प्रत्युत्तर दिया, लेकिन हम यीशु के शब्दों से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इस प्रचार का उनके जीवन में कोई असर नहीं पड़ा। वस्तुतः उन्होंने नूह से घृणा की और उसका मजाक उड़ाया और अपनी दुष्टता और असावधान जीवन शैली जारी रखा। यीशु ने कहा, "क्योंकि जैसे जल प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते पीते थे, और उन में ब्याह शादी होती थी। और जब तक जल प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा" (मत्ती 24:38, 39)।

परमेश्वर ने अपना वचन उपलब्ध कराया और सुसमाचार के प्रचारकों को अपने संदेश के साथ भेजा ताकि पापी अपने पापों से पश्चाताप करके - धार्मिकता की ओर मुड़ें (प्रेरितों 26:20; रोमियों 10:8-14)। जो भी मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर उस पर विश्वास करता है तो वह पापों के क्षमा हेतु बपतिस्मा ले सकता है (प्रेरितों 2:38; 8:37, 38)। जिस तरह संसार का जलप्रलय से धुलकर नया आरंभ हुआ उसी तरह परमेश्वर उन सबको जो भी उसके ओर फिरते हैं उन्हें वह "नए जीवन की चाल चलने" का अवसर प्रदान करता है (रोमियों 6:4)।

परमेश्वर का उद्धार (अध्याय 6)

उद्धार के कार्य में परमेश्वर ही सदैव पहल करता है। मनुष्य अपने अच्छे चरित्र और अच्छे कर्मों के द्वारा परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता है। न ही एक व्यक्ति परमेश्वर पर किसी प्रकार का दबाव बना सकता है कि वह उसका उद्धार करे। पहले परमेश्वर ने पहल की, "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है" (लूका 19:10)। यूहन्ना ने कहा, "हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया" (1 यूहन्ना 4:19)। अतः यह नूह और उसके समय के लोगों के लिए भी था। परमेश्वर, अपने प्रेम के कारण, ने यह कार्य प्रारंभ किया और उसको नूह, एक धार्मिक व्यक्ति जो पूरी रीति से परमेश्वर को समर्पित था, मिला और परमेश्वर ने उसके तथा उसके परिवार के द्वारा संसार को एक नया प्रारंभ देने की ठानी। परमेश्वर ने नूह और उसके समकालीन लोगों को आने वाले प्रलय से बचने की चेतावनी की भी पहल की। उन्हें उसने पाप से मन फिराने का अवसर भी प्रदान किया ताकि वे इससे नाश न हो जाएं।

परमेश्वर की "पूर्व निर्धारित धारणा" स्वेच्छाचारी रूप से मनुष्य का उद्धार या दण्ड का निर्धारण नहीं करता है। जबकि परमेश्वर ने दुष्टों पर जलप्रलय भेजने की ठान ली, उसने उद्धार या विनाश का निर्णय प्रत्येक व्यक्ति के स्वेच्छा पर छोड़ दिया। हर एक व्यक्ति को परमेश्वर की आज्ञा मानने व न मानने की स्वतंत्र इच्छा प्रदान की गई। आत्मिक उद्धार या दण्ड के क्षेत्र में, परमेश्वर किसी का भी भाग्य, बिना शर्तों के निर्धारित नहीं करता है। सभी को उसके पास आने का निमंत्रण है (देखें मत्ती 11:28-30; यूहन्ना 6:44, 45; प्रका. 22:17)। सर्वोत्तम नैतिक व्यक्ति परमेश्वर के बुलावे को ठुकरा सकता है और खो सकता है जबकि बुरे से बुरा पापी भी जो सच्चाई जान लेता है और विश्वास से उसका प्रत्युत्तर देता है, वह उद्धार पाता है (लूका 23:39-43; प्रेरितों 22:1-16; 1 तीमु. 1:12-16)।

आत्मिक उद्धार, अच्छे गुणों पर नहीं बल्कि अनुग्रह पर आधारित है। उद्धार, दोनों पुराने तथा नए नियम में, विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से प्राप्त होता है और यह कभी भी कर्म या अच्छे गुणों से प्राप्त नहीं होता है (एज्रा 9:8; यिर्म. 31:2; रोमियों 4:1-8; इफि. 2:8, 9)। सबसे अच्छे व्यक्ति की धार्मिकता भी परमेश्वर की धार्मिकता की तुलना में "फटे हुए मैले चिथड़े के समान होता है" (यशा. 64:6)। उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति का परमेश्वर के आज्ञा का पालन करने के लिए पर्याप्त विश्वास का होना आवश्यक है। यही नूह ने किया। इब्रानियों के लेखक ने लिखा, "विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज़ बनाया और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है" (इब्रा. 11:7)।

समाप्ति नोट्स

[1]1 एनोक 6-11. इस मूल पाठ का अनुवाद जेम्स एच. चार्ल्सवॉर्थ, संपादक, *दि ओल्ड टेस्टामेंट प्सूडोपिग्राफा* (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1983), 1:15-19 में पाया जाता है। [2]उदाहरण के लिए, इब्रानी मूल पाठ में यह "परमेश्वर के पुत्र" पाया जाता है लेकिन NJPSV इसको "स्वर्गीय प्राणी" (स्वर्गदूत) करके अनुवाद करता है। इस अनुवाद पर टिप्पणी करते हुए जॉन डी. लेवेनसन ने लिखा, "यह संक्षिप्त विवरण, एक विस्तृत तथा बहु प्रचलित मिथ्या का भाग है। यह एक और सबसे महत्वपूर्ण, मनुष्य तथा ईश्वरीय संबंध की सीमा को तोड़ने की घटना है (आयतें 1-2)।" (जॉन डी. लेवेनसन, "जेनेसिस," *द ज्यूइश स्टडी बाइबल*, संपादक अडेल बर्लिन और मार्क ज़्वी ब्रेटलर [न्यू यॉर्क: आक्सफोर्ड यूनीवरसीटी प्रेस, 2004], 21)। [3]बहुधा 2 पतरस 2:4, 5 और यहूदा 6 का संदर्भ इस संबंध में दिया जाता है कि उत्पत्ति 6:2 में "परमेश्वर के पुत्र" स्वर्गीय प्राणी थे जिन्होंने पाप किया। वे पाप तथा स्वर्दूतों के पतन का कारण देते हैं जो "भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में जो सदा काल के लिये है बन्धनों में रखा है"; लेकिन संभवतः यह शैतान और उसके दूतों के लिए है जो उत्पत्ति 3 में वर्णित मनुष्य के पतन से पहले हुआ। [4]देखें "तारगुम आफ ओनकेलोस," *द तारगुम,* अनुवादक जे. डब्ल्यू. एदरिज (न्यू यॉर्कः KTAV पब्लिशिंग हाऊस, 1968), 46. [5]दाऊद के वंश के राजाओं को परमेश्वर के पुत्र करके संबोधित किया जाता था (2 शमूएल 7:14; भजन 2:6, 7, 12)। [6]अधिकार में होने के कारण, वे न्याय करने में "अन्याय" और "दुष्टों के साथ भेदभाव" करते थे (भजन 82:2) और उन्हें "कमजोर तथा अनाथों" के साथ न्याय करने की उलाहना दी गई थी और उन्हें "पीड़ित तथा दरिद्रों" का न्याय चुकाने के लिए कहा गया था (भजन 82:3)। उन्हें यह भी चितौनी दी गई थी कि यदि उन्होंने इसका पालन नहीं किया तो वे "मनुष्यों की नाई मरेंगे" (भजन 82:7)। [7]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस,* द लिविंग वर्ड कमेंट्री (आस्टिन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कंपनी, 1979), 164. [8]कई अन्य अनुवाद भी 6:3 के "आत्मा" को बड़े अक्षरों में लिखते हैं (ASV; NIV; NKJV; NCV; NLT; ESV)। [9]इन अनुवादों में निम्नलिखित शामिल हैं: KJV; RSV; NRSV; CEV; NAB; JB; NJB; NEB; REB. [10]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर और चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सिकन आफ द ओल्ड टेस्टामेंट* (आक्सफोर्डः क्लैरडन प्रेस, 1962), 192.

[11]इस संदर्भ में इब्रानी शब्द *बासार,* नए नियम में इसके समकक्ष यूनानी शब्द σάρξ *(शार्क्स)* का समान्तर है। [12]ब्राऊन, ड्राइवर और ब्रिगस, 142. [13]कुछ NIV के प्रति में *बासार* का दूसरा अनुवाद "भ्रष्ट" पाया जाता है जो "मरणहार" से अधिक उपयुक्त अनुवाद है। [14]"तारगुम आफ ओनकेलोस," *द तारगुम,* 46. [15]गॉर्डन जे. वेनहेम, *जेनेसिस 1-15,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 1 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1987), 142. [16]विक्टर पी. हैमिल्टन, *द बुक आफ जेनेसिसः चैप्टर्स 1-17,* दी न्यू इंटरनेशनल कमेंटरी ऑन दी ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: डब्लूएम. बी. इर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 1990), 269-270. [17]तीमोथी आर. एस्ले, *द बुक आफ नंबर्स,* द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कंपनी, 1993), 243. [18]जेराल्ड एल. मैटिंगली, "अनाक," *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी,* संपादकः डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992), 1:222. [19]लोहे के चरपाई के बजाय कुछ अनुवाद यह बताते हैं कि वह प्रस्तर ताबूत था (NEB; REB; देखें TEV)। [20]ये सभी अनुवाद नेफीलिम (दानव) को स्वर्गदूत ("परमेश्वर के पुत्र") और स्त्रियाँ ("मनुष्यों की पुत्रियाँ") के संतान मानते हैं।

[21]एच. जे. स्टोबे, "נחם," *थियोलोजिकल लेक्सीकन आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट,* अनुवादक मार्क ई. बिड्डुल, संपादक एर्नेस्ट जेन्नी और क्लाउस वेस्टरमैन (पीबोडी, मस्साचुसेट्सः हेंड्रीक्सन पब्लिशर्स, 1997), 2:738. [22]रोनाल्ड बी. ऐलेन, "עָצַב," *TWOT* में, 2:687-88. [23]इस इब्रानी शब्द का संज्ञा रूप (עִצָּבוֹן*, इत्साबोन)* 3:16, 17 में आदम और हव्वा और उनके संतानों (5:29) के कड़े परिश्रम के लिए भी प्रयोग किया गया है जिससे उन्हें यह पता चले कि यह उनके पाप का परिणाम है। [24]सकारात्मक रूप से *माखाह* परमेश्वर द्वारा मनुष्य के पापों को हटाने या साफ करने

के रूप में भी देखा जा सकता है (भजन 51:1, 9; यशा. 43:25; 44:22)। (वाल्टर सी. कैसर, “מָחָה,” *TWOT* में, 1:498-99.) [25]डी. एन. फ्रीडमैन और जे. आर. लुण्डबॉम, “חֵן,” *थियोलोजिकल डिक्शनरी आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट,* अनुवादक डेविड ई. ग्रीन, संपादक जी. जोहान्नेस बॉटरवेक्क और हेल्मेर रिंग्रेन (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगन: विलिम बी. ऐर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 5:25. [26]जे. बार्टन पैन, “תָּמִים,” *TWOT* में*,* 2:973-74. [27]हैमिल्टन, 278. [28]एच. जे. स्टोबे, “חָמָס,” *TWOT* में*,* 1:437. [29]एच. हैग, “חָמָס,” *थियोलोजिकल डिक्शनरी आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट,* अनुवादक डेविड ई. ग्रीन, संपादक जी. जोहान्नेस बॉटरवेक्क और हेल्मेर रिंग्रेन (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगन: विलिम बी. ऐर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1980), 4:478-87. [30]दूसरे 7:1-4; 8:15-17; 9:1-17 में पाया जाता है।

[31]जैक पी. लुईस, “फ़्लड,” *दि एंकर बाइल डिक्शनरी,* 2:798-99. [32]इब्रानी शब्द *थेबाह* की उत्पत्ति के विषय में ठीक ठीक कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। संभवतः यह मिस्री शब्द से लिया गया होगा जिसका अर्थ “छाती,” “बक्सा” या फिर “ताबूत” हो सकता है. (ब्रूस के. वाटके, “आर्क आफ नोआह,” *इन्टरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीदिया,* संशोधित संस्करण, संपादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली [ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979], 1:291)। [33]रोनाल्ड एफ. यंगब्ल्ड, “תֵּבָה,” *TWOT* में*,* 2:964. [34]आईरिन जेकब और वाल्टर जेकब, “फ्लोरा,” *दि एंकर बाइल डिक्शनरी,* 2:805. [35]केन्नेथ ए. मैथ्यू, *जेनेसिस 1-11:26*, द न्यू अमेरिकन कमेंट्री, खण्ड 1A (नैशविल्लाः ब्राडमै एण्ड हॉलमैन पब्लिशर्स, 1996), 364. [36]*दि एपिक आफ गिलगामेश* 11.30, 57-58. [37]मैथ्यूस, 365. [38]हैमिल्टन, 282. [39]7:11 और 8:14 के अनुसार, जहाज़ में सभी प्राणी एक वर्ष दस दिन तक थे। [40]बाइबल के कई आयतें परमेश्वर के क्रोध के बारे में बताती हैं। (उदाहरण के लिए, देखें व्यव. 9:7; 2 इतिहास 24:18; यहेज. 7:19; इफि. 5:6; कुलु. 3:6.)

[41]एरिस्टोटल, *फिजिक्स* 8.6.